Volume : 1 | Issue : 12 | September 2012 ISSN - 2249-555X

Research Paper Literature

नारी सशक्तिकरण और हिन्दी साहित्य में नारी

*Parekh Neha S.

*Lecture (Hindi),I.I.T.E. Gandhinagar.

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में स्त्री का बहुत उँचा स्थान है । वह शक्ति, ज्ञान, व वैभव तीनों का दैवी प्रतीक है । आज नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे पे कंधा मिलाकर आगे बढ रही है । जिस नारी का हर क्षेत्र में इतना योगदान रहा है, और जो पहले इतनी सशक्त रह चुकी हो आज उसे क्यों इतना कमजोर कर दिया गया ? आज हर तरफ महिला सशक्तिकरण की बाते हो रही है जो सही मायने में योग्य है ।

आज भी भारत देश पुरुष प्रधान गणतंत्र बना हुआ है जिसमें महिलाओं की स्थिति कैसी है इस बात से हम भलिभाँति परिचित है । लेकिन शायद स्त्री खुद भी अपनी ऐसी स्थिति के लिए उतनी ही उत्तरदायी है जितना कि ये पुरुषप्रधान भारतीय समाज । इन बातों को समर्थन देते हुए महिला राष्ट्रीय आयोग की पूर्व अध्यक्षा श्रीमति मोहिनी गिरी का मत है कि महिलाएँ जब तक अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष नहीं करेगी तब तक पुरुष प्रधान समाज उनको कुछ नहीं देगा ।[१]

समाज व्यवस्था की हम बात करें तो यह पुरुष-प्रधान अवश्य है पर उसकी मूल ईकाई परिवार का जीवन और अस्तित्व, स्त्री, माता या पत्नी के कारण ही है । फिर भी आज हमारे समाज में स्त्री की क्यां स्थिति है उससे हम भलिभाँति परिचित है अखबारो, टेलिविजन, पत्र-पत्रिकाओं में भी आयेदिन हम देखते है कि दहेजप्रथा, बलात्कार, मारपीट जैसी अनेक मानसिक यंत्रणाओं से नारी को गुजरना पड़ता है तो एसी स्थिति को चित्रित करने में साहित्य भी इससे अछूता नही रहा । किसी भी साहित्य पर अपने युगीन परिवेश का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता ।

अनेक सामाजिक कुप्रथाओं नें नारी को बड़ी हीनावस्था में लाकर खड़ा कर दिया है । इस समाज ने कभी नारियों को पर्दाप्रथा के नाम पर घर में बंदी बनाकर रखा तो कभी दहेज के नाम पर जिंदा जलाया तो कभी पतिव्रता पत्नी की दुहाई देते हुए सती होने पर मजबूर किया । और इन सब कुरिवाजों के प्रति आवाज उठानेवाले राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद जैसे बहुत कम महापुरुष मिले । जिन्होंने नारी की पीड़ा को महसूस किया । वैदिककाल में ऋषि मुनियों ने नारी पूजा का व्यवधान किया है । मनुस्मृति में कहा गया है –

यत्र नार्येस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

यत्र तास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्र अफल क्रियः ।।

इसी पूजनीय नारी को समाजने एक घिनौना मजाक बनाकर रख दिया । मुगल साम्राज्य में तथा सामंत शाही शासन व्यवस्था में स्त्रियों को एक भोग्या से ज्यादा कुछ न माना गया । उसके ऐसे कामिनी रुप की भर्त्सना की गई । कवि संत कबीर उसे माया का साधन बताते है तथा मोक्ष प्राप्ति में अवरोध मानते है । जहाँ सीता, अहल्या, गार्गी, सावित्री जैसी विदूषी नारियाँ अपने उच्चगुणों के कारण भारतीय जनमानस में अपना अद्वितीय स्थान रखती है वहाँ समय बदलते स्त्रियों को घर से बाहर निकलना दुष्वर हो गया ।

भारतीय समाज में नारी सदा शोषित और पीड़ित ही रही । इस संदर्भ में प्रेमचंद के 'निर्मला' उपन्यास तथा 'कफन' कहानी में वर्णित नारी की स्थिति शोचनीय है जिसमें निर्मला का विवाह अपने पिता की उम्र के पुरुष के साथ किया जाता है तो कफन कहानी की नायिका जीवन पर्यत अपने परिवार की जरुरत का साधन मात्र बनकर रह जाती है । 'गोदान' में प्रेमचंद जिस तरह से धनिया और मालती का चरित्रचित्रण करते है वे भी पश्चिम और भारतीयता की बहस में उलझकर रह जाते है । बल्कि यदि स्त्रीवादी दृष्टि से देखे तो जयशंकर प्रसाद प्रेमचंद से अधिक प्रगतिशील दिखाई देते है वह ही है जो 'ध्रुवस्वामिनी' में पति के जीवित रहते ध्रुवस्वामिनी का विवाह उसकी पसंद के पुरुष से कराने की वकालत करते है । वे केवल कोरे आदर्शो को नही मानते । प्रसाद नारी की गरिमा को भलिभाँति जानते है इसीलिए वे नारी को श्रद्धा का प्रतीक मानते है इस बात की पुष्टि हमें कामायनी की इन पंक्तियों से होती है –

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में

पीयूष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में ।"[२]

कहने का अर्थ यह है कि प्रसाद में नारी के प्रति जीतनी करुणा और ममता दिखाई देती है उतनी अन्यत्र कही देखने को नही मिलती । समय बदलते स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आता गया ।

हिन्दी साहित्य में भारतीय नवजागरण का समय नूतन आर्विभाव का रहा । जब विविध आंदोलनो का प्रभाव साहित्य पर पड़ा जिसमें नारी आंदोलन भी एक है । स्वतंत्रता के बाद भारत विभाजन का सबसे ज्यादा शिकार नारियाँ ही बनी रही । यह निर्ममता का व्यवहार पूरी मानवजाति के लिए कलंक था, हिन्दी महिला कथाकारों ने इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण कदम उठाया । अतः ऐसे वातावरण में नारी के अंदर भी एक व्यक्तिवादी दृष्टिकोण उभरा । इस परिवर्तन को भारतीय जनमानस स्वीकार करने को तैयार नहीं था । जहाँ महिलां लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पूरे स्त्री समाज को जागृत करने का प्रयत्न किया । आज स्त्रीत्ववाद जिस कन्यादान की रस्म को हेय दृष्टि से देखता है उसके बारे में सुभद्रा कुमारी चौहान का हवाला लेकर महादेवी वर्मा लिखते है कि,

"जिस कन्यादान की प्रथा का सब मूक भाव से पालन करते आ रहे थे उसी के विरुद्ध उन्होंने (सुभद्रा कुमारी चौहान) घोषणा की मैं कन्यादान नही करुंगी । क्या मनुष्य, मनुष्अय को दान करने का अधिकारी है ? क्यां विवाह के उपरान्त मेरी बेटी मेरी नही रहेगी ।"[३] उस समय तक शायद किसी ने और विशेषतः किसी स्त्री ने ऐसी विचित्र और परम्परा विरुद्ध बात नहीं कही थी ।

समय बदलते स्त्रियों की स्थिति में थोड़ा सुधार तो आया लेकिन फिर भी उसकी समस्याओं में ज्यादा परिवर्तन नहीं आया । नारियों की स्थिति वहीं दलित, पीड़ित समाज जैसी ही रही इसी बात की पुष्टि तसलीमा नसरीन करती है, "स्त्री दलित है स्त्री की कोई जाति नहीं होती उसका कोई धर्म नहीं होता वह सिर्फ इस्तमाल की वस्तु है चूँकि धर्म में इसके इस्तमाल का प्रावधान है । इसीलिए मैं नास्तिक हूँ, धर्म के खिलाफ हूं । धर्म से मजबूत होता है पुरुषतंत्र । मैं पुरुषों के खिलाफ नहीं हूँ, किन्तु धर्म अनुमोदित पुरुषतंत्र के खिलाफ हूँ ।"[४]

इन लेखिकाओं ने स्त्री के अस्तित्व के प्रति आवाज उठाई, जिनमें मृदुला गर्ग, कृष्णासोवती, उषाप्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा आदी प्रमुख है । कृष्णासोवती की दिलोदानिश हिन्दी साहित्य की ऐसी पहली कृति है, जिसमें प्रथमबार एक नारी अपने अधिकारों के लिए अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत दिखाई देती है ।

समाज में ऐसा कहा जाता है कि एक नारी ही नारी की दुश्मन है और यह बात काफी हद तक सत्य भी है । नारी को मजबूर करनेवाली एक नारी है चाहे वह माँ के रुप में हो या सांस के,

इस संदर्भ में देवीकमला रत्नम् ने लिखा है "नारी के दु:खो का मूल तीन चौथाई पुरुष के स्वभाव में है तथा एक चौथाई स्वयं अपनी कमजोरी तथा संकल्प हीनता के पीछे है ।"[६]

अत: स्त्री सशक्तिकरण के जो भी प्रश्न आज समाज के सामने आ रहे है, साहित्य उनसे अलग नही रह सकता । हर काल में स्त्रियों के बलीकरण के प्रश्न बदलते रहे है । आज स्त्रियाँ अनेक समस्याओं से जुझ रही है । वहाँ साहित्यकारोंने विशेषत: महिला कथाकारों ने नारी को अपनी अस्मिता के प्रति जागृति कर एक नया जीवन दृष्टिकोण प्रदान किया है ।

REFERENCES

१.महिला सशक्तिकरण / क्यों और कैसे पृ. १८९ २.मनुस्मृति अध्याय-३ ३.कामायनी पृ. २८ ४.स्त्रीत्ववादी विर्मश साहित्य और समाज पृ.१०४ ५.हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास पृ. १६८ ६.नारीशोषण: समस्याएँ एवं समाधान पृ. १२४